Modi @ 20

हम सभी आजादी के 75वें वर्ष को मना रहे हैं यह 1947 में मिली राजनीतिक आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष है।मेरी दृष्टि में स्वतंत्रता के 3 और महत्वपूर्ण आयाम हैं, सामाजिक स्वतंत्रता,आर्थिक स्वतंत्रता और आध्यात्मिक स्वतंत्रता।सामाजिक स्वतंत्रता का सैद्धान्तिक आधार डॉ. भीम राव अम्बेडकर द्वारा लिखे गए भारतीय संविधान के समानता और स्वतंत्रता के अधिकार के प्रावधानों में निहित है।जहां प्रत्येक व्यक्ति को गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार मिला हुआ है।आर्थिक स्वतंत्रता का आशय है कि जब हर हाथ को काम और हर पेट को भोजन की न्यूनतम स्थिति प्राप्त हो जाये। अतः सच्चे अर्थों में स्वतंत्रता प्राप्ति को जब ही माना जाना चाहिये जब समाज के सबसे निचले तबके का भी विकास हो। स्वतंत्रता के संबंध में बाबासाहेब एक लेख में लिखते हैं, "भारत को केवल स्वतंत्र कराना ही पर्याप्त नहीं है, अभी तो यहां एक ऐसा श्रेष्ठ देश बने जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक अधिकार भी समान रूप से प्राप्त हों ।"

चूंकि भारत सदियों तक विदेशी शक्तियों के अधीन गुलाम रहा जिन्होंने भारत की ऋषि परम्परा से विकसित हुई प्राचीनतम संस्कृति एवं सभ्यता को नष्ट करने का प्रयास किया उसके प्रति भारतीय नागरिकों के मन में हीन भावना पैदा करने की कोशिश की। इस वैचारिक अधीनता से स्वतंत्रता दिलाने के लिए शंकराचार्य का वेदान्त दर्शन, डॉ. हेडगेवार,विवेकानन्द, डॉ. अरविंदो, वीर सावरकर सुभाष चंद्र बोस, बाबा साहेब अम्बेडकर, लोहिया और डॉ. दीनदयाल उपाध्याय का अन्त्योदय दर्शन एवं अन्य महापुरुषों का योगदान रहा है।

वर्तमान में भारत के गौरवशाली प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के भारत का प्रधान मंत्री बनने से भारत की आर्थिक सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति की इस यात्रा में वर्ष 2014 से इसमे एक महत्वपूर्ण अध्याय जुड़ गया। जहां एक और पूरा विश्व 21 जून को योग दिवस के रूप मे मान्यता दे कर भारत की विश्व गुरु की भूमिका स्वीकार कर रहा है । वहीं दूसरी और विश्व बैंक और आईएमएफ़ जैसे संस्थाएँ कह रही है की २१ वो सदी में भारत आर्थिक महाशक्ति बनकर उभरेगा तथा यहाँ ग़रीबी बेरोज़गारी की समस्या सिर्फ़ कहानियों में ही रह जाएगी।

हमारे प्रेरणा स्रोत पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी द्वारा एकात्म मानववाद दर्शन में व्यक्ति ''राष्ट्र एक परिवार'' के भाव को सामंजस्य के साथ जीवने जीते हुये राष्ट्र निर्माण में अपना सहयोग प्रदान किया।यही इस दर्शन की विशेषता है कि व्यक्ति स्वयं को वरियता न देकर समाज को वरियता देता है।
पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी के ''अंत्योदय'' को यदि सही भावना में किसी ने आत्मसात किया तो वह भारतीय जनता पार्टी है।

श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार हो या 2014 में आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी प्रधानमंत्री बनने के बाद से प्रार्टी के मूल सिद्धान्तों के अनुरूप अंत्योदय को केन्द्र सरकार ने अपनी हर योजना, हर कार्यक्रम, हर नीति सबके मूल में रखा। सिर्फ और सिर्फ एक ही उद्देश्य था अंतिम छोर पर खड़े अंतिम व्यक्ति का सशक्तिकरण।

चाहें वह भारत के हर गरीब, वंचित, शोषित व पिछड़े परिवार के लिये प्रधानमंत्री आवास योजना के रूप में पक्का मकान देना हो, चाहे वह गरीब माता बहनों के कष्टों को दूर करने के लिये उन्हें धुएं से राहत देने के लिये उज्ज्वला योजना हो, चाहें वह भारत के हर परिवार को बिजली देने के लिये उजाला योजना हो चाहें आयुष्मान स्वास्थ्य योजना में मुफ़्त इलाज हो , या किसान मानधन योजना हो या छात्रों को दी जाने वाली छात्रवृति हो और ऐसी अनेक योजनायें सभी के मूल में एक ही मंत्र था और वह था अंत्योदय।
बात सिर्फ योजना बनाने की नहीं है उसके क्रियान्वयन को सुनिश्चित कर लोगों के जीवन में परिवर्तन लाना महत्वपूर्ण है और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार विश्व में अपनी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिये जानी जाती है।

निजी जीवन गाथा

26 मई, 2014 की शाम को राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में एक इतिहास लिखा गया जब श्री नरेंद्र मोदी ने भारत की जनता से ऐतिहासिक जनादेश प्राप्त करने के बाद भारत के प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ली। भारत की जनता ने श्री नरेंद्र मोदी में एक ऐसे ओजस्वी, निर्णायक तथा विकासोन्मुख नेता की छवि देखी जो करोड़ों भारतीयों के सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आशा की एक किरण बनकर सामने आए हैं। विकास पर जोर देने, विस्तार पर नज़र रखने तथा गरीबों के जीवन में गुणात्मक बदलाव लाने के उनके प्रयासों ने श्री नरेंद्र मोदी को संपूर्ण भारत में एक लोकप्रिय तथा सम्मानित नेता बना दिया है।
श्री नरेंद्र मोदी का जीवन साहस, संवेदना तथा सतत् कठिन परिश्रम वाला रहा है। छोटी उम्र में ही उन्होंने अपने जीवन को जनता की सेवा में लगाने का निर्णय ले लिया था। उन्होंने निचले स्तर के कार्यकर्ता, एक संगठक तथा अपने गृह राज्य गुजरात के मुख्य मंत्री के रूप में अपने 13 वर्ष के लंबे शासनकाल के दौरान एक प्रशासक के रूप में अपने कौशल का परिचय दिया। यहां उन्होंने जन-हितैषी तथा सक्रिय सुशासन की शुरूआत करते हुए शासन में आमूल परिवर्तन किया।

सृजनात्मक वर्ष

श्री नरेंद्र मोदी की प्रधान मंत्री कार्यालय तक की प्रेरणाप्रद जीवन-यात्रा उत्तर गुजरात के मेहसाणा जिले के एक छोटे-से कस्बे वडनगर की गलियों से शुरू हुई। उनका जन्म भारत की आजादी के तीन वर्ष बाद 17 सितंबर, 1950 को

हुआ। वे पहले प्रधान मंत्री हैं जिनका जन्म स्वतंत्र भारत में हुआ। श्री नरेंद्र मोदी श्री दामोदरदास मोदी तथा श्रीमती हीराबा मोदी की तीसरी संतान हैं। श्री नरेंद्र मोदी एक साधारण तथा विनम्र परिवार से हैं। उनका पूरा परिवार लगभग 40/12 फीट के छोटे-से एक मंजिला मकान में रहता था।

श्री नरेंद्र मोदी के सृजनात्मक वर्षों ने उन्हें शुरू से ही कठिन परिश्रम करना सिखाया जिसके फलस्वरूप ही वे अपनी पढ़ाई तथा पढ़ाई के बाद के जीवन के बीच तालमेल बिठा पाए और अपने परिवार की चाय की दुकान पर काम करने के लिए समय निकाल पाए क्योंकि उनके परिवार को दो वक्त की रोटी की व्यवस्था करने के लिए संघर्ष करना पड़ता था। उनके स्कूल के दिनों के मित्र बताते हैं कि वे बचपन से ही बहुत मेहनती रहे। वे चर्चा करने के लिए तत्पर रहते थे तथा पुस्तकें पढ़ने के लिए उत्सुक रहते थे। उनके सहपाठी बताते हैं कि किस तरह श्री मोदी स्थानीय पुस्तकालय में घटों स्वाध्याय किया करते थे। बचपन में उन्हें तैराकी का भी शौक था।

बचपन से ही श्री नरेंद्र मोदी के विचार तथा सपने उनके हमउम्र बच्चों के विचार से बिलकुल अलग थे। शायद यह वडनगर का ही प्रभाव था क्योंकि यह सदियों पहले बौद्ध शिक्षा तथा अध्यात्म का जीवंत केंद्र था। बचपन में भी वे समाज में बदलाव लाने के प्रबल पक्षधर थे। वे स्वामी विवेकानंद के कार्यों से अत्यधिक प्रभावित थे जिससे उनके जीवन में अध्यात्म की नींव पड़ी और भारत को जगत-गुरू बनाने के स्वामी जी के सपने को पूरा करने की दिशा में कार्य करने की प्रेरणा मिली।

17 वर्ष की आयु में उन्होंने संपूर्ण भारत की यात्रा करने के लिए घर छोड़ दिया। दो वर्षों तक उन्होंने विभिन्न संस्कृतियों का पता लगाने के लिए भारत के विशाल भू-खंड की यात्रा की। जब वे घर लौटे तब वे एक अलग ही व्यक्ति थे जिसे यह स्पष्ट पता था कि उन्हें जीवन में कौन-सा लक्ष्य हासिल करना है। वे अहमदाबाद चले गए और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) से जुड़ गए। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन है, जो भारत में सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य कर रहा है। 1972 में अहमदाबाद में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का प्रचारक बनने के बाद से श्री नरेंद्र मोदी की कठिन दिनचर्या है। उनकी दिनचर्या प्रातः 5 बजे शुरू होती है और देर रात तक चलती है। 1970 के दशक के आखिरी दिनों ने यह भी देखा कि युवा नरेंद्र मोदी ने भारत में आपातकाल के दौरान दमित किए जा रहे प्रजातंत्र की पुनर्बहाली के लिए चलाए जा रहे आंदोलन में हिस्सा लिया।

1980 के दशक में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में अलग-अलग जिम्मेदारियां लेते हुए श्री नरेंद्र मोदी अपने संगठन कौशल के नमूने के साथ एक संगठक के रूप में सामने आए। 1987 में नरेंद्र मोदी के जीवन का एक अलग अध्याय तब शुरु हुआ जब उन्होंने गुजरात में भारतीय जनता पार्टी के महासचिव के रूप में कार्य करना शुरु किया। अपने पहले कार्य में श्री नरेंद्र मोदी ने अहमदाबाद के नगर निगम चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को पहली बार जीत दिलाई। उन्होंने 1990 के गुजरात विधान सभा चुनावों में भी भारतीय जनता पार्टी को कांग्रेस के बाद दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनाई।

1995 के विधान सभा चुनावों में श्री नरेंद्र मोदी के संगठन कौशल के फलस्वरूप भारतीय जनता पार्टी का मत प्रतिशत बढ़ा और पार्टी ने 121 सीटें जीतीं।

समाज सुधारक की भूमिका में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जीवन का कण-कण देश को समर्पित।

भाजपा मोदी जी के जन्मदिन को 'सेवा दिवस' के रूप में मनाती आई है। मोदी जी केवल हमारे प्रधानमंत्री ही नहीं, बल्कि जनहित के मुद्दे उठाने और जनसहयोग से उनका समाधान निकालने वाले समाज सुधारक भी हैं। खुले में शौच से मुक्ति, स्वच्छ भारत अभियान, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, जल संरक्षण और नमामि गंगे अभियान की सफलता इसके प्रमाण हैं। वह बच्चों के पथ-प्रदर्शक हैं तो उन्हें प्रेरित करने वाले गुरु भी। उनका समग्र सार्वजनिक जीवन बेदाग और निष्कलंक रहा है। वह एक राजर्षि की भांति हैं, जो सदैव समाज के उत्थान और देश के कल्याण के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहते हैं।

सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक से दुनिया को कड़ा संदेश

क्या देशवासियों ने कभी कल्पना की थी कि अनुच्छेद-370 और धारा-35 ए की समाप्ति हो सकती है? 5 अगस्त 2019 को मोदी जी की दृढ़ इच्छाशक्ति से यह संभव हुआ और जम्मू-कश्मीर के पूर्ण एकीकरण से सही मायनों में 'एक देश, एक संविधान' की स्थापना हुई। आतंकवाद को लेकर पूर्ववर्ती सरकारें कोई निर्णायक फैसला नहीं ले पाती थीं, मगर मोदी जी ने सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक से दुनिया को कड़ा संदेश देकर जताया कि भारत अब बदल गया है और अपनी सरहदों और अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए वह कोई भी कदम उठा सकता है। इसका ही परिणाम है कि पिछले सात वर्षो के दौरान देश में आतंकी घटनाओं में भारी कमी आई है और देश शांति एवं समृद्धि के रास्ते पर आगे बढ़ा है। लाल बहादुर शास्त्री जी के बाद मोदी जी एकमात्र ऐसे जननेता हैं, जिनके एक आह्वान पर पूरा देश एकजुट हो जाता है। कोरोना काल में उनके हर निर्देश पर जनता ने शत-प्रतिशत अमल किया। इससे हमें कोविड महामारी पर अंकुश लगाने में मदद मिली। उनके एक आह्वान पर समृद्ध लोगों ने सब्सिडी छोड़ दी। राष्ट्र सेवा के लिए पीएम केयर्स फंड को भर दिया। उनके आह्वान ने वैज्ञानिकों को देश में ही कोविड का टीका बनाने का मंत्र दे दिया। उन्होंने देशवासियों के मन से टीकाकरण को लेकर हिचक भी दूर की।

मोदी जी ने देश की सोच के स्तर को उठाया

2014 से पहले राजनीतिक दलों के घोषणापत्र जनता को छलने का काम करते थे, लेकिन मोदी जी के शासनकाल में भाजपा के चुनावी घोषणापत्र की प्रत्येक पंक्ति सरकार का कर्तव्य और लक्ष्य बनती गई। जनता समझ गई है कि भाजपा उससे कोई झूठे वादे नहीं करती। मोदी जी ने देश की सोच के स्तर को उठाया है। उन्होंने राजनीतिक कार्यसंस्कृति की काया ही पलट दी। भारतीय राजनीति को जातिवाद, परिवारवाद और तुष्टीकरण के दानव से मोदी जी ने मुक्ति दिलाई है। उनके नेतृत्व में विकासवाद की विशिष्ट राजनीतिक संस्कृति उ एवं प्रतिष्ठित हुई है, जिसने देश मे राजनीति की दशा-दिशा बदल दी है। परियोजनाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन के लिए उन्होंने 'प्रगति' जैसी

निर्णायक पहल की है। इससे कई दशकों से लंबित परियोजनाओं को गति मिलने के साथ ही अधिकारियों की जवाबदेही तय करते हुए भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने में मदद मिली है। इससे परियोजनाओं में देरी के कारण उनकी लागत में होने वाली वृद्धि पर भी अंकुश लगा है।

मोदी जी का कण-कण देश को समर्पित

मोदी जी असाधारण वक्तृत्व कला, करिश्माई व्यक्तित्व, ईमानदार छवि, त्वरित निर्णय क्षमता, स्पष्ट दूरदृष्टि, अनुशासित जीवन, धैर्यशीलता, नेतृत्व कुशलता, विनम्रता और देश एवं नागरिकों के लिए कुछ भी कर गुजरने की प्रेरणा के पर्याय हैं। वह सार्वजनिक एवं राजनीतिक जीवन के अनुकरणीय अलंकार हैं। त्वरित निर्णय लेने की उनकी खूबी उन्हें अनिर्णय के शिकार अधिकांश नेताओं से अलग करती है। चाहे मेड इन इंडिया वैक्सीन की बात हो या मेडिकल आक्सीजन की या फिर सक्रिय विदेश नीति या आतंक के खिलाफ आवश्यक प्रहार, हम उनकी निर्णय क्षमता के कायल हैं। हाल में ओलिंपिक एवं पैरालिंपिक में मिली सफलता में भी उनके फैसलों की छाप दिखती है। मोदी जी का कण-कण और जीवन का क्षण-क्षण देश के गांव, गरीब, किसान, दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित, युवा एवं महिलाओं के कल्याण के लिए समर्पित है। कोरोना काल में लगातार दूसरे वर्ष 80 करोड़ लोगों को उन्होंने मुफ्त अनाज मुहैया कराया। 55 करोड़ लोगों को आयुष्मान भारत के तहत पांच लाख रुपये सालाना का मुफ्त स्वास्थ्य बीमा मिल रहा है। मामूली प्रीमियम पर जीवन बीमा और दुर्घटना बीमा मिल रहा है। देश के 12 करोड़ किसानों को सालाना 6,000 रुपये की राशि मिल रही है। हर गरीब को घर और उस घर में पानी, बिजली, गैस सिलिंडर और शौचालय मिल रहा है। उनके नेतृत्व में दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे तेज टीकाकरण अभियान चल रहा है। देश में 200 करोड़ लोगों को टीके की खुराक इसका स्पष्ट प्रमाण है। पूरी दुनिया इसकी प्रशंसा कर रही है।

सबको साथ में लेकर चलने में यकीन रखते हैं पीएम मोदी

अपने जीवन का प्रत्येक दिन मोदी जी देश को समर्पित करने के उद्देश्य के साथ जीते हैं। इसके लिए वह योग से ऊर्जा लेते हैं। उनकी ऊर्जा और फिटनेस हम सभी को प्रेरित करती है। जनता से सीधे जुड़ाव के लिए ही उन्होंने mygov.com वेबसाइट शुरू की। 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से वह जनता से संवाद करते हैं और लोगों के अनुकरणीय कार्यो की सराहना भी करते हैं। उनकी सफलता का एक बड़ा रहस्य यह भी है कि वह कड़ी मेहनत करते हैं और सबको साथ में लेकर चलने में यकीन रखते हैं।

सामाजिक न्याय और सामाजिक समरसता की जब हम बात करते हैं तो बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर जी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का दर्शन व जीवन मोदी सरकार को मार्गदर्शन देता है।

भारत के निर्माण में एक सच्चे, निष्ठावान राष्ट्रवादी के रूप में बाबासाहेब ने केवल इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना नहीं की अपितु देश में व्याप्त तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों के स्वरुप को समझ कर उनके निराकरण का मार्ग भी प्रशस्त किया ।

बाबासाहेब का हृदय इतना कोमल था कि उस समय के समाज में व्याप्त विकृतियों से उनका हृदय दुखी होता था पर उन्होंने घोर विषम परिस्थितियों व निराशा से भरे समाज में एक नयी चेतना और आशा का संचार किया।

संविधान सभा में दिए गए एक भाषण में बाबासाहेब कहते हैं, ''हममें से किसी को भयभीत या सशंकित होने की आवश्यकता नहीं है । विश्व की कोई शक्ति इस देश को एक होने से रोक नहीं सकती । हम सब एकत्व की राह पर चलकर एकीकृत भारत के निर्माण में योगदान करें।"
बाबासाहेब के विचारों को जब हम पढ़ते हैं तो हम एक राष्ट्रवादी, समतामूलक समाज चाहने वाले व्यक्तित्व को देखते हैं।बाबासाहेब अम्बेडकर ने एक कथन में कहा था ''हिन्दू का संगठन राष्ट्रीय कार्य है और यह स्वराज से अधिक महत्वपूर्ण है। स्वराज से अधिक हिन्दुओं की सुरक्षा महत्वपूर्ण है। यदि हिन्दू पर्याप्त मजबूत नहीं है तो स्वराज गुलामी में पतित हो जायेगा''।
जाति विहीन समतामूलक समाज की सोच वीर सावरकर भी रखते थे। बाबासाहेब और वीर सावरकर एक ही समय के दो महान बड़े व्यक्तित्व थे जिन्होंने भारत की सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित करने में बड़ी भूमिका निभाई।चाहें वह बाबासाहेब अम्बेडकर हों या वीर सावरकर दोनों का एक लक्ष्य था समाज से जाति के आधार पर ऊंच नीच के भेद को हटाना।
दोनों महापुरुषों का मानना था कि ''धर्म हृदय, आत्मा और विचारधारा में बसता है पेट में नहीं "।
मोदी जी भारत के हर वर्ग, हर जाति, हर लिंग सभी को मजबूत करना चाहते है, वो चाहते है कि सभी मे आपसी प्रेम और सद्भाव की भावना बढ़े।
देश के कई कोनों में आज भी बहुत गरीबी है और अवसरों के अभाव में प्रतिभायें दबी रह जाती हैं। उच्च शिक्षा के लिये पैसे की कमी के कारण बहुत से छात्र अपने सपनों को छोड़ देते हैं। और विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करना अभी भी एक सपना ही लगता है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने ऐसे किसी भी बच्चे को पैसे की तंगी के कारण उच्च शिक्षा न छोड़नी पड़े और वो विदेशों में भी उच्च शिक्षा के सपनों को साकार कर सके।

मोदी जी यही सुनिश्चित करना चाहते है कि भारत के गरीबों के बच्चे स्कूल जायें अच्छी शिक्षा पायें और अपने जीवन को बेहतर तरीके से जीयें। इसके लिए मोदीजी ने एससी,एसटी, ओबीसी और सामान्य जातियों के गरीब परिवारों के बच्चों को भी आर्थिक आधार पर १० % आरक्षण की व्यवस्था की। उनका मानना है कि जब बच्चे अच्छी शिक्षा पायेंगे, रोजगार के अनेक अवसर होंगे तो रूढ़िवादी जाति व्यवस्था के पालन की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

यदि कमजोर वर्ग के बच्चों और युवाओं की शिक्षा पर हम ध्यान देंगे उन्हें अपनी प्रतिभा को संवारने और प्रदर्शित करने के मौके देंगे तो राष्ट्र के विकास में हम इनकी भागीदारी सुनिश्चित कर पायेंगे ।

भारत में गरीब- मज़दूर को हमें मजबूत करना है उनके जीवन स्तर को सुधारना है तो हमें उनको शिक्षा रूपी हथियार प्रदान करना पड़ेगा। इसी दिशा में भारत सरकार नौंवी और दसवीं कक्षा से लेकर उच्च शिक्षा व शोध कार्य तक छात्रवृति प्रदान करती है।

मुद्दा सिर्फ शिक्षा नहीं है उस शिक्षा और अच्छी कोचिंग के माध्यम से दिव्यांग बच्चों ,अनुसूचित जाति वर्ग, अन्य पिछड़ा वर्ग और आर्थिक रूप पिछड़े वर्गों के छात्रों को अच्छी नौकरियां मिलें आईआईटी, आईआईएम उच्च संस्थानों में प्रवेश के लिये कोचिंग की सहायता मिले जिससे गरीब वंचित वर्ग के विद्यार्थी और सुविधा सम्पन्न बच्चों से कहीं कम न रह जायें।

इसी दिशा में विभिन्न उच्च संस्थानों में प्रवेश के लिये और एसएससी, बैंक, यूपीएससी, राज्य लोक सेवा आयोग और ऐसी अनेक नौकरियों की तैयारी के लिये सहायता दी जा रही हैं।

मेरे स्वयं के मंत्रालय ने 4 राष्ट्रीय वित एवं विकास निगमों के माध्यम से उद्यमी व छोटे व्यापारियों, सेल्फ हैल्प ग्रुप के लिये खरवर्ष 2014 से अब तक लगभग 10000 करोड रूपये अनेकों लोगों की अपेक्षाओं के पूर्ण करने के लिये प्रदान किये हैं। हम दिव्यांग भाइयों बहनो को मुफ़्त सहायक उपकरण उपलब्ध कराते है। वरिष्ठ जनो की देखभाल के लिए भी कई प्रयास हो रहे है।
अनुसूचित वर्ग तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के उद्यमियों को कोई कसर न छूट जाये इसका पूरा ध्यान रखा । 2014-15 में इसके लिए एक वेंचर कैपिटल फंड बनाया गया जिसके माध्यम से युवाओं का नया उद्यम लगाने का सपना साकार करने का प्रयास माननीय प्रधानमंत्री जी ने सुनिश्चित किया। इस फंड द्वारा अब तक लगभग 490 करोड़ रूपये के ऋण प्रदान किये जा चुके हैं।
जहां पहले प्री मैट्रिक व पोस्ट मैट्रिक स्कॉलरशिप पर यूपीए सरकार के दस वर्षों में मात्र 14,033 करोड रूपये की स्कॉलरशिप दी, वहीं हमने वर्ष 2014 से अब तक मात्र सात वर्षों में अब तक 25,686 करोड रूपये से भी अधिक की स्कॉलरशिप प्रदान की है। इसी दिशा में कार्य करते हुये आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारे सरकार ने अब तक 4 करोड़ से अधिक छात्रवृत्तियां प्रदान की हैं। और अगले ५ वर्षों में ७० हज़ार करोड़ के व्यय से लगभग १५ करोड़ बच्चों को छात्रवृति देंगे।
इसके अलावा, हाशिए पर रहने वाले ट्रान्सजेंडर एवं भिक्षावृति समुदायों के कल्याण के लिए स्माइल योजना, घुमंतू/ अर्धघुमंतू जातियों की सीड योजना,वरिष्ठ नागरिकों के पुनः रोज़गार की सेक्रड योजना,वरिष्ठ नागरिकों को सेवाएँ देने एवं उनके जीवन को सहज बनाने के कार्य में लगे स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन की ‘सेज’ योजना,राष्ट्रीय वयोश्री योजना आदि प्रयास मोदी जी की संवेदनशीलता के कुछ उदाहरण है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र सरकार का एक ही मूल मंत्र है ‘‘अंत्योदय‘‘ अर्थात अंतिम छोर पर खड़ा अंतिम व्यक्ति भी हमारी पहुंच से दूर न हो। हमारे कार्य हमारी योजनायें हमारे प्रयास सभी उस व्यक्ति तक पहुंचे और वह हमारे सहयोग से अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सके।

हमें ऐसे लोगों को और आगे बढ़ाना होगा उनको अवसर और संसाधन बढ़ाने होंगे जिसे वह अपने सपनों और आकांक्षाओं को पूरा कर सकें।

मोदी जी का लक्ष्य भारत को विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित करना

भाजपा मोदी जी के जन्मदिन को ‘सेवा दिवस’ के रूप में मनाती आई है। उनके नेतृत्व में भाजपा का मूल मंत्र-सेवा ही संगठन है। हमारे कार्यकर्ता देश के कोने-कोने में विभिन्न प्रकल्प चला रहे हैं। मोदी जी का एकमात्र लक्ष्य भारत को विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित करना है। हमें उनके इस लक्ष्य की पूर्ति में अपना योगदान देना चाहिए।